पीएच. डी. उपाधि हेतु शोध-पूर्व प्रस्तुति

(Pre-Submission Seminar Paper)

प्रेमचन्द और रवीन्द्र-साहित्य में किसान-जीवन

Premchand Aur Rabindra- Sahitya Mein Kisaan-Jiwan

Tanuja Majumdar

शोध निर्देशक

प्रो. तनुजा मजुमदार

Shraddha Singh

शोधार्थी

श्रद्धा सिंह

EXCELLENCE SINCE 1817

PRESIDENCY UNIVERSITY
KOLKATA

हिंदी विभाग

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

Scanned with OKEN Scanner

पीएच. डी. उपाधि हेतु शोध-पूर्व प्रस्तुति

(Pre-Submission Seminar Paper)

प्रेमचन्द और रवीन्द्र-साहित्य में किसान-जीवन

Premchand Aur Rabindra- Sahitya Mein Kisaan-Jiwan

शोध निर्देशक

प्रो. तनुजा मजुमदार

शोधार्थी

श्रद्धा सिंह

PRESIDENCY UNIVERSITY
KOLKATA

हिंदी विभाग

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

प्रेमचंद और रवींद्र-साहित्य में किसान-जीवन

प्रस्तुत शोध का शीर्षक है 'प्रेमचंद और रवींद्र -साहित्य में किसान -जीवन' । यह शोधकार्य गद्य केंद्रित है इसलिए प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ के केवल गद्य साहित्य को आधार ग्रन्थ के रूप में लिया गया है।

प्रेमचंद और शरतचंद्र को लेकर कुछ शोध कार्य हुए हैं, लेकिन प्रेमचंद और रवींद्रनाथ को लेकर अब तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है । प्रेमचंद ने जमींदारी प्रथा, महाजनी प्रथा और किसानों के शोषण का चित्रण अपनी रचनाओं में विस्तार से किया है और रवीन्द्रनाथ ने जमींदारी प्रथा ,महाजनी शोषण और किसान के शोषण के प्रति अपनी रचनाओं द्वारा सामाजिक जागरूकता उत्पन्न की है। प्रेमचंद किसान जीवन की महागाथा के अमर गायक हैं तो रवीन्द्रनाथ कृषक समाज और कृषि व्यवस्था में सुधार के लिए प्रयत्नशील हैं। इसी कारण इस शोध कार्य में दोनों रचनाकारों के गद्य-साहित्य में चित्रित किसान जीवन पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।

बीसवीं सदी के आरंभिक चरण में औद्योगीकरण और शहरीकरण की वजह से ग्रामीण जीवन से लोगों का मोहभंग हो रहा था। साम्राज्यवादी नीतियों के कारण गाँवों और किसानों की स्थिति दिन पर दिन बदत्तर हो रही थी । प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ, दोनों ही साहित्यकारों का मत हैं कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। गाँवों की उन्नति में ही भारत के विकास की कुंजी निहित है। प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत यह अनुसंधान करने का प्रयत्न किया गया है कि प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ के युग में गाँव की दुर्व्यवस्था के कौन से कारण रहे हैं ? कृषक जीवन की कौन सी समस्याएँ रही हैं ? प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ के गद्य-साहित्य में इन समस्याओं को किस तरह से प्रस्तुत किया गया है? प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास का होरी, 'विध्वंस' कहानी की भुनगी और रवीन्द्रनाथ के 'सजा' कहानी की राधा जिन समस्याओं के कारण मरते हैं, उन समस्याओं पर तार्किक ढंग से विचार करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य के मुख्य शोध प्रश्न इस प्रकार हैं –

1. प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ ने किसान और ग्रामीण जीवन की किन समस्याओं को चित्रित किया है, उन समस्याओं के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक कारण क्या थे?
2. प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद और ज़मीन बंदोबस्त की समीक्षा किस प्रकार की हैं ?
3. प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ ने कृषक क्रांति को अपने लेखन में कितना महत्व दिया है ?
4. प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ ने रूसी क्रांति और मार्क्सवाद को किस रूप में स्वीकार किया और क्यों?

5. प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ ने ज़मींदारी प्रथा और महाजनी प्रथा का किस तरह विरोध किया और क्यों?
6. प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ ने किसान जीवन की समस्याओं के क्या समाधान सुझाएँ है ?
7. प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ ने ग्राम्य जीवन के पात्रों का चयन किस प्रकार से किया है एवं उनका चित्रण किस रूप में किया है ?
8. प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ के किसान पात्र कितने प्रभावी हैं और क्यों?
9. प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ ने सरकार और किसान के बीच के दुराव या मतभेद को साहित्य के माध्यम से किस तरह से पाटने की कोशिश की ?

प्रस्तुत शोध कार्य को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है

प्रथम अध्याय - प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व- इस अध्याय में प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है और उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया गया है । दोनों रचनाकारों की रचनात्मकता पर प्रकाश डालते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दिया गया है तथा युगीन परिप्रेक्ष्य में दोनों लेखकों के व्यक्तित्व और परिवेश की तुलना की गई है।

प्रेमचंद का जन्म 1880 में उत्तर प्रदेश के वाराणसी के पास एक साधारण परिवार में हुआ था, जबकि रवींद्रनाथ का जन्म 1861 में कलकत्ता के जोड़ासाँकू ठाकुरबाड़ी में एक समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध परिवार में हुआ था। दोनों लेखकों का बचपन कठिनाइयों से भरा रहा। प्रेमचंद की माता की असमय मृत्यु के बाद, उन्हें अपनी विमाता के कठोर व्यवहार का सामना करना पड़ा, वहीं रवींद्रनाथ को भी अपनी मां के निधन के बाद नौकरों के अधीन रहना पड़ा। प्रेमचंद ने मुख्यतः हिंदी और उर्दू में लिखा। जबकि रवीन्द्रनाथ ने बांग्ला और अंग्रेजी में लिखा।

प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ में 19 वर्ष का अंतराल है। रवीन्द्रनाथ का युग बांग्ला नवजारण का उत्कर्ष काल था, जिसकी पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक- राजनैतिक जागरूकता थी। प्रेमचंद का युग समाज की बुराइयों को सामने लाने और सुधार की दिशा में सक्रियता का युग था रवीन्द्रयुग के सामाजिक सुधार की पृष्ठभूमि में ब्रह्म समाज का योगदान था। प्रेमचंद के युग के सामाजिक सुधार में आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका थी। दोनों महान लेखकों ने अपने-

अपने समय और परिवेश को गहराई से अपनी रचनाओं में प्रतिबिंबित किया और अपने युग तथा समाज के महत्वपूर्ण आलोचक और विचारक बने।

द्वितीय अध्याय - भारतीय किसान : अवधारणा और साहित्यिक लेखन परंपरा - प्रस्तुत अध्याय में किसान शब्द की व्युत्पति तथा भारतीय किसान की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है।

'किसान' शब्द को 'हिन्दी शब्द सागर' के दूसरे भाग में इस प्रकार परिभाषित किया गया है "१. कृषि या खेती करने वाला। खेतिहर। २. गाँव में नाई, बारी आदि जिनके घर कमाते हैं उन्हें किसान कहते हैं"

वर्धा हिन्दी शब्दकोश में 'किसान' शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया गया है –"1.वह जो खेती-बारी का काम करता हो; खेतिहर; कृषक; काश्तकार; 2.खेतों को जोतने, बीज बोने तथा फसल काटने वाला व्यक्ति।" अर्थात् कृषि अथवा खेती से निर्वाह करने वाला वर्ग ही किसान होता है। भारत के परंपरागत मिथकों में लोक और शिष्ट साहित्य में राजाओं को भी कृषि या खेती से जोड़कर देखा गया है । जैसे –राजा जनक, बलराम को हलधर के रूप में।

प्रेमचंद का मत था कि किसान वे लोग होते हैं जिनके पास अपनी जमीन होती है, भले ही वह जमीन कितनी ही छोटी क्यों न हो, और वे उस पर खेती करते हैं। दूसरी ओर, खेतिहर मज़दूर वे होते हैं जिनके पास अपनी कोई जमीन नहीं होती और वे दूसरों के खेतों में मज़दूरी करके अपनी आजीविका चलाते हैं। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में इन दोनों वर्गों के बीच के सामाजिक और आर्थिक अंतर को दिखाया है, विशेष रूप से 'गोदान' में। 'राजर्षि'उपन्यास में रवीन्द्रनाथ ने उन किसानों को महत्व दिया जो अपनी ज़मीन पर खेती करते हैं। ये वे किसान है जो धरती के साथ गहरा संबंध रखते हैं, अपनी मेहनत से ज़मीन जोतते हैं और जीवन यापन करते हैं। जो विधान के अनुसार खेती नहीं करते, उन्हें रवीन्द्रनाथ किसान की श्रेणी में नहीं रखते हैं।

इस अध्याय में भारतीय साहित्य में किसान जीवन से संबंधित लेखन परंपरा पर भी प्रकाश डाला गया है, और किसान जीवन पर आधारित निम्नलिखित प्रमुख भारतीय कृतियों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है-

1. 'नीलदर्पण'(1860),
2. बंगदेशेर कृषक (1872-1873)
3. छह माण आठ गुंठ(1897),
4. संपत्ति शास्त्र 1907,

5. प्रायश्चित (1909),

6. ‘पुराना जमाना नया जमाना’(1919) ,

7. ‘मुक्तधारा’ (1922) ,

8. प्रेमाश्रम(1922),

9. रंगभूमि(1925),

10. रूस की चिट्ठी (1930),

11. ‘हतभागे किसान’ (1932),

12. गोदान 1936

13. ‘गणदेवता’ (1942) ,

14. मानवीनी भवाई (1947),

15. बलचनमा 1952,

16. मैला आँचल 1954

17. ‘फाँस’ (2015),

18. ‘अकाल में उत्सव’ (2016) ।

तृतीय अध्याय- प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ : ब्रिटिश साम्राज्यवाद एवं जमीन बंदोबस्त- इस अध्याय के अंतर्गत अंग्रेजों द्वारा नष्ट किये गए भारत के परंपरागत कृषि ढांचे**,** अपने फायदे के लिए लागू किये गए भू**-** राजस्व प्रणालियां यथा इजारेदारी प्रथा, स्थायी बंदोबस्त या इस्तमरारी व्यवस्था, रैयतवाड़ी व्यवस्था, महालवाड़ी व्यवस्था तथा उनके द्वारा संग्रहण के नए तरीक़ों का प्रेमचन्द और रवीन्द्रनाथ के साहित्य को केंद्र में रखकर अध्ययन -विश्लेषण किया गया है।

ब्रिटिश साम्राज्य से पूर्व गाँव स्वतंत्र आर्थिक इंकाई थी और किसान आत्मनिर्भर थे। भारतीय अर्थव्यवस्था के आधार स्तंभ थे कृषि और हस्त उद्योग। ब्रिटिश साम्राज्य ने इस आधार स्तंभ को विच्छिन्न कर दिया। प्राचीन भू व्यवस्था के अनुसार ज़मीन का मालिक किसान हुआ करता था तथा वे अपनी वार्षिक पैदवार के हिसाब से एक हिस्सा शासक को ख़िराज अथवा कर या नज़राना के रूप में दे देते थे। इस परंपरा को अंग्रेजों ने अपने स्वार्थ के लिए समाप्त कर दिया।

ज़मींदारी प्रथा की शुरुआत 1793 में हुई थी, जब 'स्थायी बंदोबस्त अधिनियम' (Permanent Settlement Act) लागू किया गया था। इसे लॉर्ड कॉर्नवॉलिस के द्वारा लागू किया गया। इस अधिनियम के तहत ज़मींदारों को भूमि का स्वामित्व और कर वसूलने का अधिकार दिया गया, जबकि किसानों को केवल भूमि का उपयोगकर्ता माना गया। इस व्यवस्था का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के लिए एक स्थिर राजस्व आधार तैयार करना था, लेकिन इसके परिणामस्वरूप किसानों को ज़मींदारों के शोषण का सामना करना पड़ा।

क्रमशः ज़मींदार विलासी हो गए और किसानों का शोषण करने लगे। रवीन्द्रनाथ का मानना था कि ज़मींदार बनना कोई गौरव की बात नहीं है। रवीन्द्रनाथ प्रमथ चौधरी की पुस्तक 'रैयत की कथा' की भूमिका में लिखा है कि ज़मींदार ज़मीन का जोंक है, वह पैरासाइट हैं, पराश्रित जीव है। प्रेमचन्द ने भी इस बात को 'प्रेमाश्रम' उपन्यास के राय कमलानंद से बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहलवाया है कि ज़मींदारी जायदाद नहीं है। इसे रियासत कहना भूल है। यह निरी दलाली है।

अंग्रेज सरकार की न्याय व्यवस्था पर दोनों लेखकों ने कुठाराघात किया है। ब्रिटिश शासन में गरीबों के लिए कोई न्याय की व्यवस्था नहीं थी। अंग्रेज भारतीय जनता को मौत के घाट उतार रहे थे लेकिन अदालत में उनके लिए कोई दंड विधान नहीं थी। रवीन्द्रनाथ ने 'अपमान का प्रतिकार' नामक निबंध में और प्रेमचंद 'ने रंगभूमि उपन्यास में कुंअर सिंह के माध्यम से इस विषय पर प्रतिवाद किया है।

दोनों साहत्यकारों का मत था कि भारत का त्याग अंगेज़ नहीं कर सकते क्योंकि आर्थिक दृष्टि से वे पूरी तरह से भारत पर निर्भर हैं। इसलिए प्रेमचन्द और रवीन्द्रनाथ ने अंग्रेजों को पराश्रित कहा है। प्रेमचंद ने 'सुदिन अथवा कुदिन' और 'रादरमियर की हाय हाय' में तथा रवीन्द्रनाथ ने 'सहकारिता' और बहुराजकता' नामक निबंध में इस विषय पर प्रकाश डाला है

ब्रिटिश काल में किसानों का पक्ष लेने पर राजद्रोह का मुकदमा चलता था जिसे प्रेमचंद ने 'रंगभूमि'उपन्यास और रवीन्द्रनाथ ने 'मुक्तधारा' नाटक में चित्रित किया है।

किसानों की ज़मीन हड़पने के लिए भाँति-भाँति के हथकण्डें औपनिवेशिक भारत में अपनाए जा रहे थे, जिसे रवीन्द्रनाथ ने 'घर और बाहर' उपन्यास में उकेरा है और प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' उपन्यास में चित्रित किया है

ज़मीन का असली मालिक कौन है ? इस पर प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ के विचारों में भिन्नता दिखाई देती है। प्रेमचंद का स्पष्ट विचार था कि जमीन उसी की है, जो उसे जोते। इसके अलावा उस जमीन पर किसी भी वर्ग का कोई अधिकार नहीं है। रवीन्द्रनाथ की सोच यहाँ अलग है। ज़मींदारी व्यवस्था को रवीन्द्रनाथ भी ख़त्म करना चाहते

थे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि राजा हरिश्चंद्र और दाता कर्ण की तरह रातो रात इस जमींदारी व्यवस्था को प्रजा के हाथ में सौप दे। उनका एक मात्र उद्देश्य था कि प्रजा और जमींदार एक साथ मिलकर काम करें। उनका एजेंडा था कि किसानों को पहले शिक्षित किया जाए। ज़मीन सम्भालने के काबिल बनाया जाए, तब इन्हें यह अधिकार दिया जाए।

चतुर्थ अध्याय - प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ : भारतीय किसान की त्रासदी- प्रस्तुत अध्याय में किसानों को रोजमर्रा की जिंदगी में सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक, प्राकृतिक आदि समस्याओं से जूझते हुए पीड़ादायी जीवन व्यतीत करना पड़ता था तथा इनकी पीड़ाओं को दोनों रचनाकारों के साहित्य में किस तरह से चित्रित हुआ है - इस पर विस्तार से विवेचन किया गया है।

प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ का मत था कि शिक्षा स्वयं में समाज सुधार का सबसे सशक्त हथियार है। इसके अभाव में किसान रूढ़ियों और अंधविश्वासों की ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं। रूढ़ परम्पराओं से इतर उन्हें न कुछ दिखता है और न कुछ सूझता है। वे उस जीवन के इतने आदि हो गए है कि उसी में उन्हें अपना कल्याण दिखाई देता है। रवीन्द्रनाथ के 'घर और बाहर' और 'गोरा' उपन्यास और 'छिन्न पत्रावली' में इसका विस्तृत चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद के 'कर्मभूमि' उपन्यास का अमर कहता है - "मैंने कभी अनुमान न किया था कि हमारे कृषकों की दशा इतनी निराशाजनक है।" सलोनी की झोपड़ी में जाकर वह कांप उठता है। उसे लगता है मानों दरिद्रता छाती पिटकर रो रही हो। सलीम गांवों की स्थिति को देखकर कहता है – "कितना अन्याय है जो कि बेचारे रोटियों के मुहताज हों, जिनके पास तन ढांकने के लिए केवल चीथड़े हों, जो बीमारी में एक पैसे की दवा न कर सकते हों, जिनके घरों में दीपक भी न जलते हों उनसे पूरा लगान वसूल किया जाए।"

रवीन्द्रनाथ ने 'श्री निकेतन के आदर्श' निबंध में लिखा है कि किसानों को इस कदर प्रताड़ित किया जाता है कि वे स्वयं से नफ़रत करने लगते हैं और अपनी गिनती पशुओं में करने लगते हैं -" वे कहा करते –'बाबू, हम तो कुत्ते है ; बिना हंटरबाज़ी या पिटाई के हमलोग कैसे सीधी तरह रह सकते हैं।"

प्रेमचंद का पात्र 'होरी' अपनी तुलना बैलों से करता है - "कानून कहता है कि हम-तुम आदमी है। हममें आदमियत कहां? आदमी वह है जिसके पास धन है, अख्तियार है, इलम है। हम लोग तो बैल हैं और जूतने के लिए पैदा हुए हैं।"

प्राकृतिक आपदाएँ भी किसानों को बरबाद कर देती है। नदी-नाले सूख जाते हैं। जमीन में पानी निचली सतह में चला जाता है। अतिवृष्टि या अनावृष्टि के बाद जो कुछ फसल बचती है उसे नील गाय या अन्य जानवर अथवा कीड़े अपना ग्रास बना लेते हैं 'राजर्षि' उपन्यास में रवीन्द्रनाथ ने इस समस्या का उल्लेख किया है और प्रेमचन्द ने 'हतभागे किसान' नामक लेख में इस पर विस्तार से प्रकाश डाला है। इसके अलावा प्रस्तुत अध्याय में कर्ज की समस्या, महिला किसान की समस्या, निजीकरण की समस्या का विश्लेषण दोनों लेखकों के साहित्य को केंद्र में रखकर किया है।

पंचम अध्याय - प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ : रूस की क्रांति और भारतीय किसान- इस अध्याय के अंतर्गत 1917 में हुई रूस की क्रांति का भारत पर और भारतीय किसानों पर क्या प्रभाव पड़ा तथा प्रेमचन्द और रवीन्द्रनाथ का इस क्रांति के विषय में क्या विचार है, उनके कथा-साहित्य के पात्र इस क्रांति का किस तरह से बिगुल बजाते हैं आदि का अध्ययन विश्लेषण किया गया है।

प्रेमचंद ने 'महाजनी सभ्यता में लिखा है - " अब एक नयी सभ्यता का सूर्य सुदूर पश्चिम से उदय हो रहा है।" रवीन्द्रनाथ 1930 में रूस गये थे और उनका कहना था कि - "फिलहाल रूस आया हूँ -- न आता तो इस जन्म की तीर्थयात्रा बिल्कुल अधूरी ही रह जाती।" प्रेमचन्द और रवीन्द्रनाथ ने रूसी क्रान्ति का अभिनन्दन किया था

प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ का विश्वास था कि जब रूस के किसान- मजदूर लड़कर अपना राज्य कायम कर सकते हैं तो भारत के किसान-मजदूर भी अपना अधिकार क़ायम कर सकते हैं। 'प्रेमाश्रम' उपन्यास का युवा तथा जागरूक किसान बलराज किसानों की मुक्ति रूस जैसी समाज- व्यवस्था में देखता है। वह सभी को एकजुट कर जमींदारों के खिलाफ बगावत करने के लिए उकसाता है। बलराज कहता है-" तुमलोग तो ऐसे हंसी उड़ाते हो, मानो काश्तकार कुछ होता ही नहीं है। वह जमींदार की बेगार ही भरने के लिए बनाया गया है ; लेकिन मेरे पास जो पत्र आता है ,उसमें लिखा है कि रूस देश में काश्तकारों का राज है ,वह जो चाहते हैं करते हैं। उसी के पास कोई और देश बलगारी हैं |वहां अभी हाल की बात है, कास्तकारों ने राजा को गद्दी से उतार दिया है और अब किसानों और मजदूरों की पंचायत राज करती है।"

रूस के प्रति यही प्रशंसा भाव रवीन्द्रनाथ का भी है – "सन 1916 में यहाँ जो क्रान्ति हुई थी,उसके पहले इस देश में निन्यानबे फीसदी किसानों ने आधुनिक हलयंत्र आँखों से देखा भी नहीं था। वे तब हिन्दुस्तानी किसानों

की तरह कमजोर-दुर्बल थे, भूखे थे, निःसहाय थे, मूक थे। आज देखते-देखते इनके खेतों में हजारों की संख्या में हल यन्त्र काम कर रहे हैं। पहले ये लोग थे बेचारे गरीब, आज ये हैं बलराम।"

रूसी क्रांति का भारत की शिक्षित महिलाओं और किसान महिलाओं पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण दोनों लेखकों के साहित्य को केंद्र में रखकर किया गया है। प्रेमचंद ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ आन्दोलन में सुखदा जैसी नारी पात्रों को संघर्षशील और दृढ़ दिखाया है। उनका मानना था इस आजादी जैसे पावन काम में महिलाएं पुरुषों के बराबर योगदान दे सकती हैं। सुखदा म्यूनिस्पैलिटी के अधिकारियों को ललकारती हैं- "मैं उन्हें दिखा दूंगी कि जिन गरीबों को तुम अब तक कुचलते आये हो, वहीं अब सांप बनकर तुम्हारे पैरों से लिपट जायेंगे।"

रवीन्द्रनाथ 'गोरा' उपन्यास की ललिता जैसी नारी पात्रों के माध्यम से क्रांति का बिगुल बजाते हैं। ललिता की माँ अंग्रेज कमिश्नर को सम्मानित करने के लिए एक नाटक आयोजित करती है। इसी अंग्रेज अफसर ने गोरा को कुछ दिन पहले सजा सुनायी थी क्योंकि वह उत्पीड़ित ग्रामीणों का पक्ष ले रहा था। ललिता - "लड़की होकर जन्मी हूँ इसीलिए चुपचाप सब सह लेना होगा, मैं ऐसा नहीं मानती। हमारे लिए भी न्याय-अन्याय और सम्भव असम्भव है। आज के न्योते में अभिनय करने जाने से आत्महत्या कर लेना मेरे लिए कहीं ज्यादा सुखद है"

रूस में बहुत सारे कारखानों में हड़ताल का नेतृत्व वहाँ की महिलाएँ कर रही थीं। इसी दिन को बाद में। 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' का नाम दिया गया। प्रेमचंद ने आत्मविश्वास से भरी ऐसी-ऐसी स्त्रियों के फौलादी व्यक्तित्व का सृजन किया है जो भविष्य के लिए नारी मुक्ति का सूत्र बन सकती हैं। 'प्रेमाश्रम' की बिलासी अपने पति और बेटे तथा सारे गांव वालों को हर जोर-जबरदस्ती का विरोध करने के लिए उत्प्रेरित करती है। बिलासी गांव की पंचायती जमीन के लिए लड़ती है। मुकदमा, आगजनी-इन सबसे निपटकर बिना भयभीत हुए कहती है- "कैसा सरकारी हुक्म ? सरकार की जमीन नहीं है।" गोदान की धनिया भी ज़मींदार, पुलिस किसी से नहीं डरती- "हमने जमींदार के खेत जोते हैं, तो वह अपना लगान ही तो लेगा। उसकी खुशामद क्यों करें, उसके तलवे क्यों सहलाएं।"

भारतीय महिला किसान अभी अपने अधिकार के लिए खड़ी हो रही थी और रूस की महिला किसान अपनी लड़ाई लड़ के अपनी स्थिति में सुधार ला चुकी थी जिसे रवीन्द्रनाथ ने आँखों देखा और लिखा कि अक्टूबर क्रांति की वजह से वहाँ की महिला किसानों की स्थिति में सुधार हुआ -"काकेशस की युवती ने दुभाषिए से कहा, 'कवि से कहो कि हम काकेशी रिपब्लिक के निवासी इस बात का अच्छी तरह से अनुभव कर रहे हैं कि अक्टूबर की क्रांति के बाद से हम लोग वास्तव में स्वाधीन और सुखी हुए हैं।" 'रूस की चिट्ठी' में लिखते हैं -"साइबेरिया की एक किसान स्त्री ने कहा, 'सहकारी खेती के काम में मैं लगभग दस वर्ष से हूँ। एक बात याद रखें, सहकारी कृषि-

क्षेत्र (कलेक्टिव फार्म) के साथ नारी उन्नति के उद्यम का घनिष्ठ संबंध है। आज दस वर्ष के अंदर यहाँ किसान स्त्रियों में काफी परिवर्तन हो गया है। अपने पर उन्हें बहुत कुछ भरोसा हो गया है।

छठवां अध्याय - प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ : किसान जीवन में सुधार की संभावनाएं और वास्तविकता- प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ कृषक जीवन में सुधार लाने के लिए कृषि सहायक बैंक की स्थापना पर बल देते हैं। प्रेमचंद 'कृषि सहायक बैंकों की ज़रूरत' नामक लेख में माँग करते हैं- "ऐसे साधन भी होने चाहिए, जिससे किसानों को थोड़े सूद पर रुपए मिल सके। इसके लिए कृषि सहायक बैंक खोले जाने चाहिए।" रवीन्द्रनाथ के 'घर और बाहर'उपन्यास का निखिल भी किसानों की मदद के लिए बैंक खोलता है –"एक बार उन्होंने सोचा कि हमारे देश में कारोबार न चलने का प्रधान कारण बैंकों का अभाव है। उसी समय उन्होंने मुझे इकोनोमी पढ़ानी शुरू की। उन्होंने जनसाधारण के मन में बैंक में रुपया जमा करने की इच्छा और अभ्यास पैदा किया। फिर एक छोटा -सा बैंक खोला गया।"

प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ जहां कृषि को देश का अभिन्न अंग मानते थे वही उद्योग-धन्धे को देश की रीढ़। देश के विकास में कृषि और उद्योग दोनों की भूमिका अहम थी और इस बात से दोनों लेखक अच्छी तरह वाकिफ थे। इनका अगर विरोध था तो उस व्यवस्था से जिसमें किसानों और मजदूरों का शोषण होता है।

प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ कृषि प्रणाली को आधुनिक करने के पक्ष में थे। उनका मानना था कि बिना आधुनिक उपकरणों के कृषि प्रणाली को सुधारा नहीं जा सकता क्योंकि इससे उत्पादन जड़त्व को प्राप्त हो जाएगा तथा किसानों की समस्याओं को किसी भी तरह से दूर नहीं किया जा सकेगा। आधुनिक तकनीकियाँ तेजी से उत्पादन और बेहतर किस्म के फसलों के लिए आवश्यक है। 'घर और बाहर' उपन्यास का निखिल कृषि क्षेत्र में तरह-तरह के प्रयोग करता है। नई-नई फसले उगाने की कोशिश करता है। वही 'प्रेमाश्रम' का प्रेमशंकर भी रासायनिक खादों का उपयोग करके यंत्रों की मदद से नूतन तरीके की खेती करता है। उसके प्रयासों से उत्पादन में बढ़ोतरी भी होती। रवीन्द्रनाथ ने भी वैज्ञानिक तरीक़े से खेती करने की शुरुआत की थी जिसका विस्तृत विवरण रथींद्रनाथ ने 'पितृ स्मृति'में दिया है।

रवीन्द्रनाथ ने 'सहकारिता' निबंध में लिखा है –"कुछ लोग कहते हैं, मानवीय व्यवहार से यंत्र बिलकुल निर्वासित करने से सारी विपत्ति दूर होगी। लेकिन यह विचार श्रद्धा के योग्य नहीं।...दो हाथ प्राप्त करने के बाद मनुष्य ने जब भी यंत्र की मदद से अपनी कर्मशक्ति को बढ़ाया तब वह जीवन पथ पर विजय की ओर अग्रसर हुआ हैं।" 'गाँव का रूप' नामक निबंध में भी रवीन्द्रनाथ ने यही बात कही है।

सातवां अध्याय - प्रेमचंद का ह्रदय परिवर्तित जमींदार और जमींदार रवीन्द्रनाथ- प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में ऐसे जमींदार पात्रों की सृष्टि की है जो ज़मींदारी प्रथा के ख़िलाफ़ खड़े होते हैं और एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करते हैं जिसमें उनके पात्र सेवक के रूप में अपने कर्तव्य का पालन करते है जैसे 'रंगभूमि' उपन्यास का विनय, 'प्रेमाश्रम' उपन्यास का प्रेमशंकर, 'संग्राम' नाटक का सबल सिंह तो दूसरी ओर रवीन्द्रनाथ ने स्वयं जमींदार होते हुए भी अपने वास्तविक जीवन में किसानों के नीरस जीवन को सरस बनाने की कोशिश की। उन्होंने अपनी ज़मींदारी में सिंचाई व्यवस्था, सड़क निर्माण , स्कूल निर्माण, वैज्ञानिक खेती आदि ग्राम सुधार के महत्वपूर्ण काम किए थे। 'रूस की चिट्ठी', 'पल्ली प्रकृति','गँवई -गाँव,''आदर्श ग्राम', 'श्रीनिकेतन के आदर्श', 'समवायनीति', 'सहकारिता' , 'संभाषण', 'पल्ली सेवा','भूमि लक्ष्मी' आदि रचनाओं में किसानों की शिक्षा , किसानों के लिए स्कूल, अस्पताल की स्थापना, खाद बनाने का परीक्षण, वैज्ञानिक तरीक़े से खेती करना, बांध बनवाना, धर्मगोला की स्थापना, किसानों के ख़ाली समय को प्रयोग में लाने की व्यवस्था करना, बैंक की स्थापना, मंडली प्रथा की शुरुआत, अपनी अगली पीढ़ी को किसानों की देख भाल करने के लिए तैयार करना आदि क्षेत्रों में रवीन्द्रनाथ द्वारा किए गए प्रयासों का विस्तृत विवरण मिलता है।

'संग्राम' उपन्यास का सबल सिंह कहता है –"मैं रैयत का मित्र बनकर रहना चाहता हूँ, शत्रु बनकर नहीं। अगर रैयत को ग़ुलामी में जकड़े और अंधकार में डाले रहने के लिए ज़मींदारों की सृष्टि की गई हैं तो मैं इस अत्याचार का पुरस्कार न लूँगा।" सबल सिंह के बारे में किसान कहते हैं –"बहुत गाँव देखे, पर ऐसा ठाकुर नहीं देखे।"
रवीन्द्रनाथ 'छिन्न पत्रावली -१' में लिखते हैं –"यहाँ के प्रजाजनों के ऊपर मन का वास्तविक स्नेह उमड़ पड़ता हैं –इनको किसी भी तरह का कष्ट देने की बिलकुल इच्छा नहीं होती, इनके सरल बच्चे जैसे अकृत्रिम स्नेह भरे अनुरोध को सुनकर वास्तव में मेरा मन भीग जाता हैं। जब ये 'तुम' कहते कहते 'तू' कह उठते हैं, जब मुझे डाँटने लगते हैं, तब मुझे बहुत मधुर लगता है।" एक किसान प्रजा ने जमींदार रवीन्द्रनाथ का पैर छूकर कहा -"मेरा जनम सार्थक हो गया।"

प्रेमचंद ने जिस ह्रदय परिवर्तित आदर्श ज़मींदार पात्र की कल्पना अपनी रचनाओं में की थी उसी की प्रतिछवि ज़मींदार रवीन्द्रनाथ में देखने को मिलती है। इसलिए इस अध्याय में प्रेमचंद के आदर्श ज़मींदार पात्र और जमींदार रवीन्द्रनाथ के कृषक जीवन में सुधार और कृषि क्षेत्र में प्रयोग का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

निष्कर्ष – प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ ने उपेक्षित किसानों की पीड़ा को न केवल अपने दिल की अतल गहराइयों से अनुभव किया, बल्कि उन्हें अपने साहित्य में अभिव्यक्ति प्रदान की । दोनों लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किसानों की दीनता, भूख, गरीबी और असहायता की ओर अपने समय के सुधारकों, बुद्धिजीवी, शासक, साहित्यकार, नेता और पाठक का ध्यान आकर्षित किया ।

प्रेमचंद और रवीन्द्रनाथ न केवल एक साहित्यकार थे, बल्कि एक सच्चे समाज सुधारक भी थे । समाज में व्याप्त कुरीतिओं और विसंगतियों को दूर करके एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना चाहते थे, जहां अत्याचार और शोषण न हो । उनका विश्वास था कि जनता की जाग्रति और अत्याचार के विरुद्ध उनके संघर्ष करने की शक्ति के द्वारा ही सामाजिक तथा आर्थिक वैषम्य एवं पूँजीवादी व्यवस्था का अंत संभव है। इसीलिए अपनी लेखनी द्वारा सामाजिक विकारों, आर्थिक विषमता, असमानता, रूढ़िवादी परंपराओं, धार्मिक पाखंडों और अंधविश्वासों के विरुद्ध संघर्ष करने की शक्ति तथा उत्साह प्रदान करते हैं ।

प्रेमचंद अपने काल्पनिक पात्र प्रेमशंकर के माध्यम से जिस रामराज्य की स्थापना के लिए प्रेमाश्रम की स्थापना करते हैं, उसी रामराज्य की स्थापना ,आदर्श गाँव का निर्माण रवीन्द्रनाथ 'कालीग्राम'के रूप में अपनी ज़मींदारी में करते हैं। उन्होंने 1905 में पतिसर में सहकारी कृषि बैंक खोला था और 1913 में नोबेल पुरस्कार से प्राप्त धनराशि का इस बैंक में निवेश कर अपनी ज़मींदारी 'कालीग्राम' के किसानों को महाजनों से मुक्ति दिलाई थी । इतना ही नहीं 1906 में अपने बेटे रथींद्रनाथ और एक मित्र के बेटे संतोष मजूमदार को कृषि पालन और गोपालन विद्या सिखाने के लिए अमेरिका के इलियस विश्वविद्यालय भी भेजा था । फिर 1907 में अपने दामाद नगेंद्रनाथ गांगुली को भी कृषि विज्ञान के अध्ययन के लिए अमेरिका भेजा था । 1909 से लेकर 1921तक कृषि विश्वविद्यालय 'श्रीनिकेतन' की स्थापना और विकास के द्वारा प्रेमचंद की कृषि शिक्षा की कल्पना को साकार करते हैं।

आधार ग्रंथ

प्रेमचंद के साहित्य से संबंधित आधार ग्रंथ -

1. कुछ विचार, भाग 1 ,प्रेमचंद , सरस्वती प्रेस प्रकाशन, बनारस , तृतीय संस्करण : 1945
2. प्रेमचंद चिट्ठी पत्री भाग- 2, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : 1962
3. प्रेमचंद, प्रेमाश्रम, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, वर्तमान संस्करण :1979
4. प्रेमचंद, रंगभूमि भारतीय भाषा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण : 1996

5. प्रेमचंद, कर्मभूमि, संपादक- राम आनंद,'प्रेमचंद रचनावली'-5, जनवाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण :1996,
6. 'ग़बन', प्रेमचंद, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर, संस्करण : 1987
7. प्रेमचन्द, 'गोदान' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण -1999
8. प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, डायमंड बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017
9. http://premchand.co.in/stories [विध्वंस, ठाकुर का कुँआ , जेल]
10. 'विविध प्रसंग 1' अमृतराय (संकलन और रूपांतर), हंस प्रकाश, इलाहाबाद, संस्करण :1962,
11. 'विविध प्रसंग ३' अमृतराय (संकलन और रूपांतर),,हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण प्रेमचंद स्मृति दिवस -1962
12. , 'विविध प्रसंग २' अमृतराय (संकलन और रूपांतर),,हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण प्रेमचंद स्मृति दिवस -1962

रवीन्द्रनाथ के साहित्य से संबधित आधार ग्रंथ –

1. 'रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली खंड-32, इंद्रनाथ, चौधुरी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013
2. 'रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली खंड-36, इंद्रनाथ, चौधुरी सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013
3. 'रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली खंड-37 इंद्रनाथ, चौधुरी,, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013
4. 'राजर्षि' रवीन्द्रनाथ टैगोर -संपादक (राजस्वी,एम.आई.), फिंगरप्रिंट प्रकाशन, प्रथम संस्करण:2019
5. विचित्र प्रबंध – डॉक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर, इंडियन प्रेस प्रकाशन, प्रयाग, प्रथमावृति : 1924,
6. राजा और प्रजा- डॉ रवीन्द्रनाथ टैगोर, अनुवादकर्ता -श्रीयुत बाबू रामचंद्र वर्मा, हिन्दी-ग्रंथ-रत्नाकर कार्यालय, बंबई, संस्करण : 1919
7. रूस की चिट्ठी (भ्रमण कहानी)- श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनुवादक -धन्यकुमार जैन, विशाल भारत पुस्तकालय

8. **छिन्न-पत्रावली १** ‘रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली खंड-39 इंद्रनाथ, चौधुरी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013
9. **छिन्न-पत्रावली २** ‘रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली खंड-40, इंद्रनाथ, चौधुरी सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013
10. , ‘गोरा’ रवीन्द्रनाथ टैगोर , - अनुवादक सच्चिदानंत हीरानंद वात्स्यायन, अज्ञेय, साहित्य अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-1986
11. ‘घर और बाहर’ - रवीन्द्रनाथ टैगोर सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली,संस्करण -1946
12. , ‘रवीन्द्रनाथ के नाटक’ (द्वितीय खंड) रवीन्द्रनाथ टैगोर -अनुवादक : स०ही०वात्स्यायन ‘अज्ञेय’ व अन्य, साहित्य अकादमी प्रकाशन , नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1963
13. ‘रवीन्द्रनाथ टैगोर रचनावली खंड-28, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013
14. रवींद्र द्वादशी, भाषान्तरवाद-राधेश्याम पुरोहित, राजकमल एंड संज प्रकाशन,
15. रवीन्द्रनाथ रचनावली खंड -17, रवीन्द्रनाथ टैगोर, विश्वभारती प्रकाशन, संस्करण : 25 बैसाख 1352
16. ‘विशाल भारत’, (सं.) श्रीराम, शर्मा, विशाल भारत कार्यालय, कलकत्ता, भाग-29, जनवरी-जून 1942

संदर्भ ग्रंथ

1. कलम का सिपाही- अमृत राय, हंस प्रकाशन, द्वितीय संस्करण : 2021
2. ‘प्रेमचंद और उनका युग’ रामविलास,शर्मा , राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली , पाँचवाँ परिवर्धित संस्करण : 1989
3. प्रेमचंद घर में, शिवरानी देवी, नयी किताब प्रकाशन, प्रथम संस्करण :2020
4. प्रेमचंद और भारतीय किसान, प्रो. रामबक्ष, वाणी प्रकाशन, नयी दिली, प्रथम संस्करण : 1982
5. हिन्दी का गद्य साहित्य- डॉ रामचंद्र तिवारी , विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण : 2012

6. आधुनिक हिन्दी उपन्यास, संपादक भीष्म साहनी व अन्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण : 1980
7. ‘प्रेमचंद’,नरेंद्र, कोहली, वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1991
8. ‘प्रेमचन्द के आयाम’ ए अरविंदाक्षन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006, पृष्ठ संख्या -16

9. ‘विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर’ इलाचंद्र, जोशी, भारतीय विद्या भवन इलाहाबाद प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 1956
10. , ‘ रवीन्द्रनाथ ठाकुर एक जीवनी’ कृष्ण कृपलानी, अनुवादक- रणजीत साहा, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया प्रकाशन,
11. ‘जीवन स्मृति’, कवि सम्राट श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर अनुवादक -जैन श्री सूरजमल, मित्र-ग्रंथमाला-कार्यालय सीतलामाता बाजार इंदौर प्रकाशन, प्रथम आवृति : 1930,
12. ‘मेरा बचपन’ रवीन्द्रनाथ, ठाकुर , अनुवादक -हजारीप्रसाद द्विवेदी, विश्वभारती, कलकत्ता प्रकाशन,प्रथम संस्करण : 1998,
13. ‘Rabindranath Nath Tagore On Rural Reconstruction’ Sudhir,Sen, published by Vishva-Bharati, Calcutta , First Published : 1943
14. ‘रवीन्द्रनाथ और हिन्दी साहित्य’ डॉ सत्य प्रकाश, तिवारी,,ज्योति पब्लिकेशन, कोलकाता, प्रथम संस्करण : 2019
15. Rabindranath Tagore A Life of Intimacy with Nature’- Debarati, Bandyopadhyay, published by Rupa Publication , New Delhi , First Impression : 2019
16. ‘Tagore Without Illusions’ Hitendra, Mitra, published by Anustup Prakashani , Kolkata, First Published : 1983
17. ‘Centenary Volume L.K.Elmhirst 1893-1993’,- Manjula, Bose, published by Utpal Chaudhary, Tagore Research Institute, Calcutta, First Publication : 1994

18. 'A Poet's Experiment In Rebuilding Samaj And Nation :Sriniketan's Rural Reconstruction Work, 1922-1960', Dikshit, Sinha , Published by Birutjatio Sahitya Sammilini Kalimohan Pally ,Bolpur, Second Impression : 2019

19. , 'A history Of Sriniketan', Umadas, Gupta, Published by Niyogi Books , New Delhi, Publication :2022,

20. 'Glimpses Of Bengal Selected Letters 1885-1895',- Rabindranath, Tagore, Published by Niyogi Books, New Delhi, Publication :2018

21. ' एकत्रे रवीन्द्रनाथ, अमिताभ, चौधरी, देज पब्लिकेशन, कलकत्ता , प्रथम प्रकाश : 1983, तृतीय प्रकाशन : 2008

22. 'राष्ट्रवाद बनाम देशभक्ति रवीन्द्रनाथ ठाकुर और इयत्ता की राजनीति', आशिस, नंदी, अनुवादक-दुबे अभय कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2005, आवृत्ति संस्करण : 2015

23. ' रवीन्द्रनाथ का विश्वास जगत' सत्येंद्रनाथ, राय, देज पब्लिकेशन, कलकता, संस्करण: 2004, द्वितीय संस्करण : 2013

24. 'मुंशी प्रेमचंद गल्प उपन्यास गोदान' रामबहाल, तिवारी, साहित्यलोक प्रकाशन, प्रथम संस्करण : 2001

25. , 'हिंद-स्वराज', महात्मा, गांधी, शिक्षा भारती प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण: 2013

26. 'हिन्दी शब्दसागर' द्वितीय भाग, (मूल संपादक) श्यामसुन्दर, दास, बी०ए० ['उ' से क्वैलिया तक, शब्द संख्या–20000], काशी नागरी प्रचारिणी सभा, परिवर्धित, संशोधित, नवीन संस्करण : 1967

27. 'वर्धा हिन्दी शब्दकोश'(प्रधान संपादक) रामप्रसाद, सक्सेना, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण : 2014

28. 'किसान आंदोलन दशा और दिशा' किशन, पटनायक, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006

29. 'हिंदी साहित्य का इतिहास', आचार्य रामचंद्र, शुक्ल, , नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं. 2047 वि

30. 'नील दर्पण' दिनबंधु मित्र, -(रूपांतरण)जैन, नेमिचन्द्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006

31. बंकिमचन्द्र, 'प्रतिनिधि निबंध',संपादक- अमित्रसूदन भट्टाचार्य, (हिन्दी अनुवाद), दिल्ली, संस्करण: 1995

32. 'छह माण आठ गुंठ' फ़किरमोहन, सेनापति, -(अनुवादक)नवलपुरी,युगजीत, साहित्य अकादेमी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1959, द्वितीय संस्करण : 1986

33. 'संपातिशास्त्र' महावीरप्रसाद, द्विवेदी, इंडियन प्रेस, प्रयाग, संस्करण : 1908

34. तलवार, वीरभारत, 'किसान राष्ट्रीय आंदोलन और प्रेमचंद : 1918-22', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण : 2008

35. , 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', (संपादक)डॉ नागेंद्र ,मयूर पेपरबैक्स प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1973, बयालीसवाँ पुनर्मुद्रण संस्करण : 2012,

36. 'गणदेवता' तराशंकर, बंद्योपाध्याय,['चण्डीमण्डप' एवं 'पंचग्राम']-(हिन्दी रूपांतरण)तिवारी, हंसकुमार,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली,तृतीय संस्करण : 1970

37. 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास',प्रो. गोपाल राय , राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002,

38. 'मैला आँचल', फणीश्वरनाथ, रेणु, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1984, पाँचवीं आवृत्ति: 2012

39. 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास', डॉ. बच्चन, सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1996, पहली आवृत्ति : 2008

40. 'फाँस', संजीव, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2015

41. 'अकाल में उत्सव', पंकज, सुबीर, शिवना प्रकाशन,मध्य प्रदेश, प्रथम संस्करण : 2016

42. भारत वर्तमान और भावी - रजनी पाम दत्त, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नयी दिली, हिन्दी संस्करण : 1976

43. आज का भारत- रजनी पाम दत्त, दि मैकेमिलन कंपनी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, प्रथम हिन्दी संस्करण :1977

44. भारतीय संस्कृति और हिन्दी-प्रदेश : 2, रामविलास शर्मा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2018

45. आधुनिक भारत, सुमित सरकार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009

46. पितृ स्मृति – रथींद्रनाथ, श्रीमती इंद्रा कुंड जिज्ञासा पब्लिकेशन, कोलकाता, संस्करण : बैसाख 1395, प्रकाशन,

वेबसाइट लिंक

1. https://www.apnimaati.com/2017/11/blog-post_44.html
2. *nios.ac.in/media/documents- Chapter 17 -Economic effects of British Colonialism*
3. *https://en.wikipedia.org/wiki/Economic_history_of_India#cite_note-1*
4. *Dutt, Romesh Chunder (1904). India in the Victorian Age: An Economic History of the people. Kegan Paul, Trench, Trubner and Co., Ltd.*
5. *[https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_Army_during_World_War_II]*
6. https://m.statisticstimes.com/economy/country/india-gdp-sectorwise.php